क्या परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म किए हैं?

बाइबल के अनुसार, परमेश्वर ने मनुष्य जाति के इतिहास में कई बार आश्चर्यकर्म किए हैं। हम विशेष प्रश्न कि ''क्या मसीही धर्म के प्रारम्भ में आश्चर्यकर्म सचमुच हुए थे?'' पर विचार करेंगे। इस प्रश्न पर विचार करते हुए, डेविड ह्यूम का निर्णय था कि वह आश्चर्यकर्मों के लिए गवाही की विश्वसनीयता के विरुद्ध अपने अनुभव बताएगा।

क्या कोई गलती हो सकती है?

क्या गवाही में कोई गलती या धोखा हो सकता है? क्या गवाही को नकारकर आश्चर्यकर्मों पर विश्वास करना आसान है? एडविन ए. बर्ट के अनुसार, कई मामलों में ''झूठ उस तथ्य से अधिक चमत्कारी हो सकता है जिसे यह स्थापित करने का प्रयास करता है।''

अति संदेहवादी होने का अर्थ किसी भी बात पर विश्वास करने वाले की तरह अविवेकी होना है। यदि कई गवाह हों जो स्वतन्त्र, पूर्वाग्रह रहित, गम्भीर और ईमानदार हों और घटना किसी प्रसिद्ध स्थान पर घटी हो तो इन्हें विश्वसनीयता के स्वीकार्य सिद्धांत माना जाएगा।

यीशु के पुनरुत्थान के बारे में सोचें

यदि यीशु की घायल देह पुन: जीवित हो गई थी, तो हमारे पुनरुत्थान की उम्मीद है और बाइबल के दूसरे सभी आश्चर्यकर्मों पर विश्वास करना आसान हो जाता है। यदि यीशु की देह मुर्दों में से जी नहीं उठी, तो हमारी आशा किसी काम की नहीं, और किसी भी आश्चर्यकर्म पर विचार करने का कोई लाभ नहीं। इसलिए मसीहियत के अस्तित्व का आधार उस एक आश्चर्यकर्म में ही है।

पुनरुत्थान की गवाही के बारे में क्या विचार है? पांच सौ से अधिक लोगों ने गवाही दी कि उन्होंने अपनी आंखों से जी उठे मसीह को देखा है (1 कुरिन्थियों 15:6)। सुसमाचार के वृत्तांत यद्यपि विरोधात्मक नहीं हैं, परन्तु इतने भिन्न हैं कि उन्हें लिखने में स्वतन्त्रता दिखाई देती है न कि मिलीभगत। गम्भीर अर्थात विवेकी लोगों ने यह विश्वास नहीं किया कि पुनरुत्थान होने वाला था। उन्हें पहली बार सुनकर भी विश्वास नहीं हुआ। कइयों को तो, जी उठे मसीह को देख और छू लेने के बाद भी उनके ''अविश्वास और मन की कठोरता पर

उलाहना दिया'' गया था (मरकुस 16:14)। इन लोगों के मन में भी ह्यूम की तरह ही पुनरुत्थान के विचार के विरुद्ध पूर्वाग्रह था; इसलिए उन्हें स्पष्ट करना आवश्यक था। बाद में पुनरुत्थान पर आधारित अपनी अनन्त भलाई को समझकर, वे अपने जीवनों से यह गवाही देने को तैयार हो गए थे कि उन्होंने कब्र में मसीह के गाड़े जाने के बाद उसके साथ भोजन किया था।

ऐसे व्यवहार को केवल ''ईमानदारी'' ही कहा जा सकता है। उन्होंने किसी आधुनिक अनुभववादी की तरह ही आलोचनात्मक ढंग से उसकी परख की थी। उन्होंने परीक्षण सिद्ध करने का ढंग अपनाया अर्थात कब्र में जाकर कफ़न और सिर के रूमाल की भी जांच की गई थी। गवाहों से सवाल-जवाब किए गए थे। उन्होंने जीवन के वचन को अपने हाथों से छुआ था!

नकली आश्चर्यकर्म ठहर नहीं सकते

मसीहियत के सर्वोत्तम आश्चर्यकर्मों की नकली आश्चर्यकर्मों से कोई तुलना नहीं की जा सकती। यीशु के पुनरुत्थान का प्रमाण किसी भी धर्म में होने वाले आश्चर्यकर्मों से बहुत ऊंचाई पर है। निष्क्रिय, वास्तविक, कानूनी प्रमाण में हमारे प्रभु का पुनरुत्थान सबसे अच्छी प्रामाणिक ऐतिहासिक घटना है।